श्रीगुरु की सिखावनियों का माहात्म्य

सिद्धयोग पथ पर अध्ययन किए जाने वाले शास्त्रों से उद्धरण

कुलार्णवतन्त्र से एक श्लोक

श्लोक १०८

भगवान शिव द्वारा कहा गया, उस 'एक' का परम ज्ञान

किसी भी अनुष्ठान तथा तप से मुक्त है। उसे श्रीगुरु के मुख से ही प्राप्त करना चाहिए।

कुलार्णवतन्त्र एक शास्त्रीय ग्रन्थ है जिसकी रचना लगभग आठवीं और दसवीं शताब्दी के बीच हुई। दक्षिण भारत की एक आध्यात्मिक परम्परा, कौल मार्ग [कौलाचार] से इसका निकट सम्बन्ध है। कुलार्णवतन्त्र, मनुष्य के क्रमिक विकास की आधारशिलाओं के रूप में गुरु, शिष्य, मन्त्र तथा पूजा जैसे विषयों पर प्रकाश डालता है।

कुलार्णवतन्त्र, अध्याय १, श्लोक १०८
अंग्रेज़ी भाषान्तर : रामकुमार राय
[वाराणसी, भारत : प्राच्य प्रकाशन, १९८३] पृ. १८।
मुखपृष्ठ डिज़ाइन और प्रारूप रचना : हाइमे आ. कस्तन्येदा
© २०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।